

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

www.shaharsamta.com

शोध पत्र

‘कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।’-

उमेश श्रीवास्तव

संस्थापक: स्व० कन्हैया लाल, स्व० श्रीमती साधना श्रीवास्तव

सम्पादक: उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

वर्ष 26 अंक 21 रविवार, इलाहाबाद, 18 अक्टूबर 2026 पृष्ठ 4 विशेषांक मूल्य: 3 ₹०

❖ संपादकीय

इस बार यामा शर्मा ‘उमेश’



उमेश श्रीवास्तव
संपादक

पढ़ना-लिखना और खेलना,
दिनचर्या में शामिल था।
साहित्यिक था माहौल घर का ,
साहित्यिक पत्रिका आती थी।
फिर क्या क्या था,
लिखना पढ़ना शुरू हुआ।
इसी तरह बस मेरी यात्रा ,
काव्य जगत में शुरू हुई।

तो बात हो रही है देहरादून की यामा शर्मा ‘उमेश’ की । सरस भाव की सुंदरतम कविता लिखने वाली यामा शर्मा ‘उमेश’ जीवन के तमाम-उतार चढ़ाव के बीच भी लिखती रही। माता-पिता की होनहार संतान यामा शर्मा ‘उमेश’ में भी कविता लिखने का बीजारोपण बचपन से ही पड़ गया था। वह लिखती थीं और अपने घर में सुनाया करती थीं। पति भी उनकी रचनाओं का रसास्वादन लिया करते थे। साहित्यिक माहौल होने के कारण उनकी रचनाओं में निरंतर निखार आता गया। आज वह एक होनहार और श्रेष्ठ कवयित्री के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं। कुछ बानगी देखिए पहले बानगी

“

बच्चों शाला जाकर देखो
ज्ञान मिलेगा मान मिलेगा
पुस्तक का भण्डार मिलेगा
जीवन में सम्मान मिलेगा

दूसरी बानगी

“

यह कैसा अँधेरा है
आम बसेरा है
सूरज की लालिमा को
धुंध ने घेरा है

तीसरी बानगी

“

बहुत धीर धरी है मैंने
अपने मन को कैसे समझाऊँ
दुःख के आँसू नदियाँ बन
वह निकले हैं

इसी के चलते यामा शर्मा ‘उमेश’ को सितंबर माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है। संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है। अंक कैसालगा, प्रतिक्रिया जरूर दीजिए।

अंत में -

लिखा पहाड़ों और नदियों पर,
लिखा मनुज व्यवहारों पर।
क्या-क्या बात बताऊं तुमको,
लिखा सभी ही धारों पर।

-उमेश श्रीवास्तव



❖ जीवन संघर्ष

मेरा लेखकीय सफर और जीवन-संघर्ष

जीवन संघर्ष

जमींदारी देख चुकी दुबे परिवार जो जिला मैनपुरी (उत्तरप्रदेश) रहता था, सौभाग्य से उस परिवार में जन्म लिया, यह परिवार संयुक्त परिवार की परम्पराओं को निभाते हुए 30 से40 लोगों की भावनाएँ, आदर, सत्कार, एवं जिम्मेदारी के साथ आगे बढ़ रहा था। जब होश समझाला तो मैं शहर के व्यवसाय से वकील एवं दूसरी तरफ एक कवि पिता के घर में जन्मी थी। माँ और पिताजी दोनों उस समय उच्च शिक्षा लिए हुए थे। पिताजी सुबह अदालत और गवाह की तैयारी कराते और शाम होते ही कवियों का जमावड़ा जो कि दिनचर्या में था। मेरा सौभाग्य रहा कि कवि गोष्ठियों को घर में होते देखा। पढ़ना, लिखना

और खेलना दिनचर्या में शामिल था। घर में सभी तरह का साहित्य आता था, बच्चों के लिए बच्चों की पत्रिकाएँ और बड़ों के लिए हिन्दुस्तान, धर्मयुग, नवनीत, और अंग्रेजी का साहित्य भरा रहता था। कविता ने मन में जगह शादी के बाद बनायी, घर की जिम्मेदारी के साथ जीवन के उतार- चढ़ाव एवं आते-जाते भावों ने कविता लिखने के लिए प्रेरित किया। अभी तो लिखना शुरू किया लेकिन श्रोता की कमी. पिताजी से तो कभी कहा ही नहीं कि मैंने कविता लिखना शुरू कर दिया है। सौभाग्य से बड़ी बहन भी शिवानी के साहित्य पढ़ती थी ,साहित्य में रुचि रखती हैं। मैंने कभी -कभी उनको कविता लिखकर सुनाना

शुरू किया। श्री अनिल शर्मा मेरे जीवन के साथी हैं कविता उनको भी सुनाती और बदलाव करने हैं या नहीं पूछती, कविता के गुरु मेरे जीवन में मेरे पिताजी ही रहे । इसी बीच अहा:जिन्दगी चित्र प्रतियोगिता में स्थान बनाया, और कविता अपनी यात्रा पर चल पड़ी। जिम्मेदारियों के बीच हिंदी मंचों के माध्यम से कविता को जाना और सीखने की ललक आज भी है। संघर्ष जीवन का अनुपम गहना है, इसके बिना जीवन अधूरा है।

❖ कवितायें



यामा शर्मा ‘उमेश’
कवयित्री

बच्चों

बच्चों शाला जाकर देखो
ज्ञान मिलेगा मान मिलेगा
पुस्तक का भण्डार मिलेगा
जीवन में सम्मान मिलेगा
बच्चों शाला जाकर देखो....
पहली शाला घर है बच्चों
माँ, पिता से संस्कार मिलेगा
दादा, दादी के जीवन से
अनुभवों का मार्ग मिलेगा
बच्चों शाला जाकर देखो.....
विध्या की शाला में जाकर
जीने का अधिकार मिलेगा
खेल कूद कर पढ़ना लिखना
खुलकर हँसना गाना जानो
बच्चों शाला जाकर देखो.....
शिक्षक के सानिध्य में रहकर

जीवन सफल बनाना सीखो

अज्ञानी को ज्ञान बाँटना
पढ़ना और पढ़ाना सीखो
बच्चों शाला जाकर देखो...
खट्टे मीठे अनुभव होंगे
टेढ़े -मेड़े रस्ते होंगे
मेहनत से तुम लड़ना सीखो
नया विश्वास बनाना सीखो
बच्चों शाला जाकर देखो.....
मेहनत सफलता की पूँजी है
आगे बढ़ते जाना
माँ, पिता को सम्मान दिलाना
शाला के इस आँगन में तुम
रोज नया इतिहास बनाना
बच्चों शाला जाकर देखो...
हाथ जोड़ कर विनती करना उसकी
जिसने मानव रूप दिया है

मन मन्दिर में उसे सजाकर

अपना व्यक्तित्व सजाना देखो।।
बच्चों शाला जाकर देखो
बच्चों शाला जाकर देखो।।

मेरा उत्तराखंड

मौन खड़े, हिम से ढके
चमके चमके, उजले उजले
पर्वत शिखर खड़े यहाँ
झरने करते मनमानी हैं
मेरे उत्तराखंड की यही निशानी है
पवन के मन्द मन्द झोंके
बिखरे पत्ते हरे, पीले पीले
चीड़ साल के जंगल यहाँ
बुरांश करता मनमानी है
मेरे उत्तराखंड की.....
गंगा बहती कल कल करती

❖ कवितायें



यामा शर्मा ‘उमेश’

कवयित्री

मेरे बिगड़े काम बनाने वाले
अपने हृदय लगाने वाले
कुछ तो कह दो अपने मन से
मैंने क्यों देखा तुमको विस्मय से ।

कहाँ जा रहे हो?

कटते जंगल
सूखती नदियाँ
दरकते पहाड़
सुलगते सवाल
कहाँ जा रहे हो?
मिलावटी रिश्ते
कई चेहरे दिखते
प्रदूषण की मार
साँसें गई हार
गिरते आधार
कहाँ जा रहे हो ?
कंकरीट के जंगल
इंच. इंच की दरकार
सड़कों पर दंगल
इंसानियत शर्मसार
कहाँ जा रहे हो?
टूटते घरबार
भूल गये आँगन
सिमट गये फलैटों में
बन्द बन्द कमरों में
बरामदों के खम्भों पर
घूमता था बचपन
कहाँ जा रहे हो?

देहरादून

देहरादून तुम कहाँ हो ?
तुम्हारे हसीन निशां नहीं मिलते
वादियाँ पूछ रही हैं कुछ
ढूँढ रही हूँ तुम्हें कब से
तुम्हारे आकाश में
कहकशां नहीं मिलते
देर हुई तुमको बचाने में
इस आबोहवा के जमाने में
मिलते तो आशियाँ बहुत हैं
पर पहले जैसे मकां नहीं मिलते
पेड़ों की शीतल छाया
और ठंडी मन्द-मन्द हवा
पेड़ों के कटान हो रहे हैं
अब लीची के बाग बगीचे और
चाय के बागवान नहीं मिलते
सड़कों पर दौड़ते थे तोंगे इक्के
सैर करते थे शहर की
दौर था प्यार का
अब वो घोड़े की टाप नहीं है
ऊँचे नीचे रास्तों पर
पैदल चलने वाले हमराह नहीं मिलते
तुम्हारी सुन्दर सूरत को
किसकी नजर लगी
भर गया कंकरीट का जंगल
ढूँढ़ने पर भी कहीं चरागाह नहीं मिलते
कई नदियाँ थीं हमसफर इसकी
रिस्पना सूख गयी बन गयी नाला
बिंदाल भी कहाँ गयी बन गयी खाला
बहती थी नहर शहर के बीच से
अब नहर के नामोनिशान नहीं मिलते
थे टीक के जंगल इसी शहर में
गूलर और अमलतास की खुशबू इसी शहर मे
बुरांश और टेसू के फूलों के क्या कहने
अब पहले जैसे बागवान नहीं मिलते
ऊँची हिमालय की चोटियों पर बर्फ
दिखती थी हमारे घर से
अब ऊँची इमारतों के आगे
छोटे घर कहीं नहीं टिकते
प्यार था रिश्तों में गहराई थी
मान और सम्मान था शराफत थी
अब सब अजनबी से लगते हैं
अब दिल से दिल नहीं मिलते।।
देहरादून तुम कहाँ हो
तुम्हारे निशां नहीं मिलते
ढूँढ रही हूँ तुम्हें तुम्हारे ही घर में

पेड़ों पर, खेतो में फूलों में पौधों में
बर्फ की चोटियों पर,पगड़ंडियों पर
खाली खाली सड़कों पर
हाय री किस्मत हमारी
तुम्हारे पते और मकान नहीं मिलते
देहरादून तुम कहाँ हो
देहरादून तुम कहाँ हो।।

मन की बात

बहुत धीर धरी है मैंने
अपने मन को कैसे समझाऊँ
दुःख के आँसू नदियाँ बन
वह निकले हैं
अपनी पीर किसे बताऊँ
लक्ष्मण रेखा लाँघ गई मैं
तेरे प्राणों की खातिर
श्राप से बचकर,सुध-बुध खोकर
अपने मन की बात तुम तक
कैसे पहुँचा पाऊँ.....
कैसे दिन निकले हैं मेरे
कैसे निकली मेरी रातें
आँखें पथरा गई हैं मेरी
उनको कैसे समझा पाऊँ.....
हर फूल, हर कली, तिनके से भी
मन की बातें करती हूँ
हृदय खोल कर रख देती हूँ
भावों को मैं कैसे समझाऊँ
अशोक-वाटिका में बैठ अकेली
' हे राम' 'तुम्हारे कैसे दर्शन पाऊँ....
चौमासा भी निकल रहा है
भर गए हैं बाग बगीचे
भीगा तन और भीगा मन है
हरियाली से भरा बगीचा
फिर भी सूखा मेरा दर्पण है
ये बारिश ये गर्जन सबको बोला
अपना यह संदेश
तुम तक कैसे पहुँचा पाऊँ....
जिधर भी देखूँ
तुम्हारी ही छवि दिखती है
हर कण में, हर चेतन में
विश्वास मुझे है, तुम्ही तो हो
मेरे मन मंदिर में
तुमसे कैसे मिल पाऊँ....
' हे राम ' मैं नितान्त अकेली
तेरे पथ पर कैसे आऊँ.....
दिन में स्वप्न तेरे में देखूँ
रातों की बेबस मजबूरी
हृदय चीर कर किसे दिखाऊँ
अपने प्राणों को तेरे चरणों मैं अर्पित कर
छोड़ आयी हूँ
ये बात किसे बताऊँ.... ।
हे राम.....

बारिश

बारिश आयी बारिश आयी
काले काले बादल लायी
बिजली चमक रही है भाई
बारिश आयी बारिश आयी
आँगन में भर गया है पानी
छपछप करते हम मनमानी
छोटी मोटी बूँदें पड़ती
आँखों में भर गया है पानी
बारिश आयी बारिश आयी..

ले कागज की नाव बनाते
हाथों से उसको सहलाते
देखो कैसे बहकर जाती
जोर जोर से शोर मचाते
बारिश आयी बारिश आयी..
आसमान से बूँदे आती
कभी मारती कभी हँसाती
गोल गोल बनते बताशे
टोमी भाँक रहा है भाई
बारिश आयी बारिश आयी...
इस पानी को बहने मत दो
बड़े बड़े तालाबों में भर लो
करो सिंचाई इस पानी से

बूँद बूँद की कीमत समझो
बारिश आयी बारिश आयी
काले काले बादल लायी।।

मेरे अँगना

जीवन की एक नयी राह में
रिश्तों की एक नयी चाह ने
एक प्यारा सा मुखड़ा देखा
चांद सा नाजुक टुकड़ा देखा
कोमल सी नादान कली को
सपनों में रंग भरते देखा
ममता की गोदी में लेटी
हँसते देखा रोंते देखा
तुम आयीं तो त्यौहारों को
खुशियों की झोली में देखा
पापल की घुंघरू की छन छन
सात स्वरां में बजते देखा
तुम आयीं मेरे उपवन में
खिलती खुशियों की मुस्कानें
सावन सी आँसू की बूँदें
गिर मोती से बनते देखा
तेरी आँखों के कजरे को
मैंने अपना सब कुछ वारा
तेरे हाथों के कंगने को
अर्पित कर दिया जीवन सारा
अन्तिम है
जीवन के अदभुत रिश्ते को
प्यार भरे इस अविरल जल को
ममता के मेरे अँगने में
किलकारी से भरते देखा

जीवन की एक नयी राह में
रिश्तों की एक नयी चाह ने
एक प्यारा सा मुखड़ा देखा
चांद सा नाजुक टुकड़ा देखा
चांद सा नाजुक टुकड़ा देखा ।।

चाँद के पार

हम तेरी चाह में वहाँ तक पहुँचे
चाँद के पार एक और जहाँ तक पहुँचे
हम तेरी चाह...
हमको मालूम है कि बात इतनी सी नहीं है
फिर भी हम ढूँढ़ने तेरे आसमां तक पहुँचे
हम तेरी चाह में....
अँधेरे तेरे साथ साथ क्यों उजालों को बता
हम उजालों को लिए अँधेरों को मिटाने पहुँचे
हम तेरी चाह
खूबसूरत समां है तारों की महफिल में
हम चौंदनी को समेटे तेरे दरमियाँ पहुँचे
हम तेरी चाह में....
प्यार और इश्क भरा संसार तेरी सूरत का
हम आशिकी का तौफा ले तेरे मकां पहुँचे।
हम तेरी चाह में वहाँ तक पहुँचे।।

माँ शारदे

तेरी वन्दना मैं करूँ शारदे
तेरी अर्चना मैं करूँ शारदे
तुम हौंसला दो मेरी लेखनी को
मेरे कंठ को तुम स्वरां से सजा दो
सरगम से मेरी झोली भरो माँ
सुजनता के सारे दीपक जला दो
मेरे भावों को तुम शुद्धता दो
संवेदना को कागज पर उतारो
कृपादृष्टि डालो मेरी तरफ भी
अज्ञान के अंधरे मिटा दो
हाथों में वीणा कमल पर विराजें
विधा की देवी विध्या की देवी
तेरी वंदना हम करते हैं हर दिन
ऐश्वर्य से अलंकृत करा दो।।

बसंत

सोचो ऋतुओं को पाती पहुँचाई है किसने
मन्द मन्द खुशबू बिखरायी है किसने
झर गये हैं पीले पते बाग में
आया बसंत फूली सरसों के राग में
हर कली खिली खेतों में

ऋतुओं का व्यवहार है
बासंती कोपल से निकला
नव गीतों का त्योहार है
मिला सूर्य को नेह निमंत्रण
नरम सुनहरी धूप है
पीले पीले सरसों के दाने
धरती का सुन्दर रूप है
अमवा की डाल पर बौर खिले
कोयलिया बोली बागों में
बासंती फूलों के झोंके
नये रंग लिए मधुमास है
शब्दों की अल्पना सजाये
भावों के तोरण द्वार हैं
गीत कुन्दन का श्रृंगार किये
सुर सरगम के दरबार हैं
फागुन भरे प्यार का आँचल
रंगों से सराबोर है
बासंती रंग से रंगी चुनरिया
होली होली का शोर है
नमन करूँ मैं वीणावादिनी
तेरा आशीर्वाद मेरे साथ रहे
कंठ सुकोमल मृदुस्वर हों
तेरे चरणों का मेरा साथ रहे।।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख	
देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -९1 98378 94997	
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -९1 78696 43222	
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-९1 94151 6९522	
हैदराबाद ब्यूरो - रीना प्रदीप कुमार,-९1 70935 29183	
भिलाई ब्यूरो - संय्या चंदेल,-९1 99९34 42579	
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228	
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, - ९1 96439 687९7	
तिनसुकिया गोलघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - ९1 94355 15469	
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851	
चंडीगढ़ सिटी - प्रमजोत कौर -९1 76969 19159	
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-९1 97549 69496	
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -९1 98630 29640	
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-९1 70003 39148	
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-९1 78694 58122	
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711	
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -९1 94256 52547	
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-९1 93004 31143	
बनारस ब्यूरो - सुनीता जोहरी, -९1 6386 869 055	
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोबारा खानुन-९1 96787 72219	
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,-९1 98971 11416	
धम्मरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -९1 6265 018 551	
बैंगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -९1 84709 77659	
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -९1 73768 96768	
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -९1 83170 45106	
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -९1 85060 60468	
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -९1 70708 00416	
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --९1 97933 18465	
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -९1 93007 55500	
भीलवाड़ा इकाई - डॉ राजमति पोखराना 81046 39622	

संस्थापक

स्व० कन्हैया लाल, स्व० साधना श्रीवास्तव	
 </	

❖ लघुकथायें



यामा शर्मा ‘उमेश’

कवयित्री

में ‘रेखा’

बेटा, माँ मेरा पानी गरम हो गया, ओ हो, मेरे कपड़े अभी भी प्रैस नहीं हैं।

अब मैं नहाऊँ या प्रैस करूँ? अरे मत परेशान हो अभी करती हूँ कपड़े प्रैस,

तब तक तू नहा ले। मैंने आपको कितनी बार कहा है मेरे कपड़े ठीक कर दिया करो, हाँ बेटे अभी करती हूँ।

टिफिन बना दिया ? हाँ नहाले देती हूँ। सुबह सुबह प्रश्ननों की झड़ी। रसोई और कमरों के चक्कर।

मैं कपड़े सम्हाल ही रही थी कि विनोद (पति) की आवाज आयी अरे चाय तो दे देती। देखा अम्मा कबसे गरम पानी का इन्तजार कर रही है, हाँ अभी देती हूँ। पति को चाय दी, अम्मा और बाबू जी को गरम पानी. बेटा आज चाय में थोड़े तुलसी के पते डाल देना, थोड़ी ठन्ड बढ़ गयी है जी बाबूजी, पर मुझे भी ओफिस जाना है अपनी भी तैयारी करनी है, कोई नहीं समझता। तब ही बेटा माँ टिफिन, हाँ लो और सब खा लेना, बेटा स्कूल की बस का इन्तजार कर रहा है, मैं सोच में हूँ ऐसे कैसे चलेगा इतना काम, (विनोद) अरे रेखा (पत्नी) मेरे जुराब तो यही रखे थे तुम पता नहीं क्या करती हो, आती हूँ धुलवा दिये हैं आप दूसरे पहन लो, मैंने जल्दी से (विनोद) पति का भी टिफिन पैक किया और अपना भी, पति टिफिन लेते हुए बोले अपना ध्यान रखना, मैं सोच रही थी सुबह चार बजे से उठकर रात को ग्यारह बजे तक मशीन की तरह काम, ऊपर से सबकी फरमाइश का नाश्ता, खाना

औफिस का काम, दूधवाले, सब्जी वाले भड़या भी मुझे ही आवाज़ देते हैं

बीबीजी लौकी और तोरई की बेल कहाँ लगेगी, यह भी मैं ही बताउंगी।

मैमसाहब उतरिये, अरे औफिस आ गया, हाँ जी आपकी तबीयत तो ठीक है? हाँ हाँ बिलकुल ।

मुझे पता है कि तबियत कभी कभी मशीनों की भी खराब होती है और उनको भी ठीक कराना पड़ता है।

मैं तो इन्सान हूँ यह सोचते सोचते कुर्सी पर जा बैठी, बैग मेज पर रखा

काम शुरू हुआ ही था कि अचानक से ध्यान आया माँ बाबू जी की दवाइयां तो खत्म हो गयीं हैं, जिंदगी क्या मेरे इर्दगिर्द ही सिमट गयी, नाजुक से कन्धों पर न जाने कितना आर, क्या करूँ छोड़ूँ किस पर। इन्ही शब्दों के साथ

एक नारी सब पर भारी। शब्द को ज्वलंत करती मैं ‘रेखा’।।

बेगाना मन

वो ही तो है मन जो शहनाई और ढोलक की थाप के

❖ **जीवन परिचय**

साथ इस घर में आया था. हर तरफ रौनक ही रौनक, कहाँ बेठायेँ कहाँ उठाएं समझ ही नहीं आया था. बाग, बगीचे, कलरव करते पक्षी सभी ने अद्भुत नजारा दिखाया था. धीरे धीरे समय निकला घर में एक नया मेहमान आया है सभी के लाड प्यार से बड़ा हुआ. माँ तुम कहाँ हो ? तुम्हारी गोद में बैदूंगा, तुम्हारी उंगल ी पकडूंगा नहीं दोगी तो मैं रोज़ंगा कहकर हाथ छोड़ना ही नहीं चाहता था. पर अब समय बदल चुका है बाग, बगीचे और कलरव करते पक्षियों को अचानक ये क्या हो गया है वो चुप क्यों हैं पहचान क्यों नहीं रहे. जो घर अपना और बहुत अपना लगता था अचानक बेगाना क्यों हो गया है. घर के दरवाजे खिड़की छूने से डर लग रहा है. जो बच्चे ऊँगली पकड़ कर चलना चाह रहे थे आज वो कुछ भी देखने के लिए तैयार नहीं हैं. घर तो मेरा ही है लेकिन क्यों सब कुछ छूटता जा रहा है. मैं पीछे जा रही हूँ यह सब आगे कहाँ जा रहा है? अरे और आगे कहाँ जा रहा है? पकड़ो रोको इसे, यह चला

जायेगा पर तभी किसी ने बड़े जोर से झकझोरा क्या बड़बड़ा रही हो सारे दिन बड़बड़ाली हो बुड़ढ़ी हो गयी हो ज्यादा बोलो मत भगवान् का ध्यान करो. मैं और मेरा बेगाना मन यह सोचने पर मजबूर हैं कि मन क्या तुम सचमुच बेगाने हो गए हो ?

मेरी गुड़िया

लौट गई बचपन में, मां से ज़िद कर रही थी।

मुझे गुड़िया चाहिए मुझे गुड़िया चाहिए

माँ कह रही थी, अच्छा ठीक है बाबा ला दूंगी बाज़ार से ।

मैं रोने लगी आप पता नहीं कब बाज़ार जाओगी ?

कब गुड़िया आयेगी। जाऊँगी बाबा जाऊँगी, काम खत्म कर लूँ।

मैं रोने लगी और रोते-रोते सो गयी। सोते सोते ल ग रहा है कि मां कह रही है ये लो, अच्छी सी गुड़िया बना लो

मैं सारा सामान बाज़ार से ले आयी हूँ

तुम कुछ अच्छा सीखोगी, और गुड़िया भी बन जायेगी।

मैंने देखा बहुत सारा सामान है मैंने मां से कहा इनसे गुड़िया कैसे बनेगी, फिर रोने लगी मां प्यार से हाथ सिर पर फेरते हुए बोली,

चलो मैं तुम्हारे साथ बनवाती हूँ ठीक,

सच में माँ ? मैं बहुत खुश वाह यह तो अच्छा है आप मेरी मदद करोगे

हम दोनों ने गुड़िया बनाना शुरू किया। सुन्दर सी गुड़िया बन रही थी।

मैं देख-देख कर खुश हो रही थी उसके कपड़े, उसके बाल उसके आभूषण। धीरे धीरे उसने पूरा रूप ले लिया। माँ ने दिखाया देखो कितनी सुन्दर गुड़िया बनी है

मैं बहुत खुश, मां ने जैसे ही गुड़िया मेरे हाथ में दी, गुड़िया हाथ से छूट कर अलग हो गयी और डांस करने लगी। मैं हैरान, परेशान

यह कैसी गुड़िया है गुड़िया तो ऐसी नहीं होती। मैं चिल्ल ने लगी।

मां जल्दी आओ देखो इस गुड़िया को। घबराकर आँख खुली, मेरे साथ तकिये पर एक सुन्दर सी गुड़िया भी सो रही थी।

मैंनेले जल्दी से गुड़िया हाथ में उठाई पर वह न तो बोल रही थी और मेरे हाथ में ही थी। मैं दौड़ कर माँ के पास गयी और मा से लिपट गयी

और सोचा वो सपना था यह सच्चाई है।

भीखू

अंधे माँ बाप की सुन्दर संतान भीखू। माँ बाप दिन भर सड़क पर भीख माँगते भीखू इधर उधर खेलता रहता ।

भीखू दूर नहीं जाया करो उसको छूकर मां नसीहत देती। पर उन्हें नहीं पता था कि शहर का नामी सेठ भीखू को खाने की चीजें और खिलौने दिलवाया करता है। किसने दिलवाया माँ पूछती तो बच्चा सहम कर कहता सेठजी ने। ऐसे ही गये रोज सेठ गाड़ी से आता और भीखू को कुछ न कुछ दे जाता। रात होते ही भीखू माँ बाप का हाथ पकड़े किसी भी दुकान की देहरी पर सो जाते। एक दिन सेठ बहुत सारे खिलौने लेकर आया और बोला मेरे साथ चलोगे ? भीखू के पिता ने पूछा कहां? मेरे घर नहीं हम नहीं जायेंगे भीखू भी यहीं रहेगा। मैं तो आप दोनों को भी ले जाऊँगा भीखू के साथ अच्छे से रहे। मैं भीखू को पढ़ा लि खा कर अच्छा इंसान बनाना चाहता हूँ, आप सोचना मैं कल फिर आऊँगा कह कर सेठ चला गया। अगल े दिन न भीखू दिखा न माँ बाप । गाँव वाले सोचने ल गे कि भीखू गाँव छोड़कर चला गया। कई साल बीत गये भीखू नहीं दिखा। एक दिन एक गाड़ी आयी वहां रुकी जहाँ भीखू खेलता रहता था। सूटबूट में एक नौजवान गाड़ी से उतरा और इधरउधर देख रहा था शायद कोई पहचान ले पर कोई पहचान नहीं पाया। अचानक चाय की दूकान चला रहे बुजुर्ग ने बोला बेटा आप को देखा देखा लग रहा है। हाँ चाचाजी मैं भीखू हूँ अरे तुम तो बड़े आदमी हो गये । हाँ चाचाजी. एक बड़े सेठ हमें अपने घर ले गये उन्होंने मेरा एडमिशन अच्छे स्कूल में करा दिया माँ बाप की सेवा के लिए नौकर रख दिया और बाद में उन्होंने उन्होंने मुझे अपना बेटा घोषित कर दिया। अब सेठ जी के न रहने पर उनका सारा कारोबार मैं ही सम्हालता हूँ। वाह बेटे खुश रहो। अरे चाचाजी आपकी याद आयी तो आपसे मिलने चला आया, आप बहुत प्यार से चाय देते थे हमको और पैसे भी नहीं लेते थे। अरे बेटे यह क्या? आपके लिए कुछ सामान लाया हूँ मना नहीं करना। भीखू गाड़ी में बैठकर चला गया यह कहकर कि फिर आऊँगा एक और भीखू की जिन्दगी सम्हालने, सजाने ।

क्या? आपके लिए कुछ सामान लाया हूँ मना नहीं

करना। भीखू गाड़ी में बैठकर चला गया यह कहन फिर आऊँगा एक और भीखू की जिन्दगी सम्हालने, सजाने ।

चाचाजी ने देखा कि बहुमूल्य तौहफों के साथ पैसे भी थे। अरे इतना?

ईश्वर की कृपा हो तो समय बदलते देर नहीं लगती ।

भीखू

अंधे माँ बाप की सुन्दर संतान भीखू। माँ बाप दिन भर सड़क पर भीख माँगते भीखू इधर उधर खेलता रहता ।

भीखू दूर नहीं जाया करो उसको छूकर मां नसीहत देती। पर उन्हें नहीं पता था कि शहर का नामी सेठ भीखू को खाने की चीजे और खिलौने दिलवाया करता है। किसने दिलवाया माँ पूछती तो बच्चा सहम कर कहता सेठजी ने। ऐसे ही गये रोज सेठ गाड़ी से आता और भीजू को कुछ न कुछ दे जाता। रात होते ही भीखू माँ बाप का हाथ पकड़े किसी भी दुकान की देहरी पर सो जाते। एक दिन सेठ बहुत सारे खिलौने लेकर आया और बोला मेरे साथ चलोगे ? भीखू के पिता ने पूछा कहां? मेरे घर नहीं हम नहीं जायेंगे भीखू भी यहीं रहेगा। मैं तो आप दोनों को भी ले जाऊँगा भीखू के साथ अच्छे से रहे। मैं भीखू को पढ़ा लि खा कर अच्छा इंसान बनाना चाहता हूँ, आप सोचना मैं कल फिर आऊँगा कह कर सेठ चला गया। अगल े दिन न भीखू दिखा न माँ बाप । गाँव वाले सोचने ल गे कि भीखू गाँव छोड़कर चला गया। कई साल बीत गये भीखू नहीं दिखा। एक दिन एक गाड़ी आयी वहां रुकी जहाँ भीखू खेलता रहता था। सूटबूट में एक नौजवान गाड़ी से उतरा और इधरउधर देख रहा था शायद कोई पहचान ले पर कोई पहचान नहीं पाया। अचानक चाय की दुकान चला रहे बुजुर्ग ने बोला बेटा आप को देखा देखा लग रहा है। हाँ चाचाजी मैं भीखू हूँ अरे तुम तो बड़े आदमी हो गये । हाँ चाचाजी. एक बड़े सेठ हमें अपने घर ले गये उन्होंने मेरा एडमिशन अच्छे स्कूल में करा दिया माँ बाप की सेवा के लिए नौकर रख दिया और बाद में उन्होंने उन्होंने मुझे अपना बेटा घोषित कर दिया। अब सेठ जी के न रहने पर उनका सारा कारोबार मैं ही सम्हालता हूँ। वाह बेटे खुश रहो। अरे चाचाजी आपकी याद आयी तो आपसे मिलने चला आया, आप बहुत प्यार से चाय देते थे हमको और पैसे भी नहीं लेते थे। अरे बेटे यह क्या? आपके लिए कुछ सामान लाया हूँ मना नहीं करना। भीखू गाड़ी में बैठकर चला गया यह कहकर कि फिर आऊँगा एक और भीखू की जिन्दगी सम्हालने, सजाने ।

चाचाजी ने देखा कि बहुमूल्य तौहफों के साथ पैसे भी थे। अरे इतना?

ईश्वर की कृपा हो तो समय बदलते देर नहीं लगती ।



यामा शर्मा ’उमेश’

नाम : यामा शर्मा ’उमेश’**माता का नाम :** स्व: श्रीमति सरोजिनी दुबे, **पिता का नाम :** स्व: श्री उमेश चन्द्र दुबे
स्वनामधन्य यशस्वी पिता ने कवयित्री सुश्री महादेवी वर्मा के काव्य संग्रह ’ यामा ’ जिसमें भावों को रेखाचित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया गया है से प्रेरित होकर अपनी पुत्री को डयामाड नाम दिया ।साहित्यिक पृष्ठभूमि में पल ी बढ़ी यामा ने मैनपुरी में अपना बचपन घर के आंगन में कवियों की चाल ढाल और ना नुकुर के बीच जी भर के जिया है । स्वरों व शब्दों को थिरकते देखा है । राजनीति शास्त्र में परास्नातक पिता की परम्परा को बढ़ाने को उत्सुक सहयोगी संस्थाओं से इतर जहां इअह्रा ज़िंदगी।इ

में भी यामा की कविता का प्रवेश हो चुका है । वहीं दूसरी ओर अपनी स्वरचित कवितायें अपने शब्द बोध और अभिव्यक्ति के कारण विभिन्न माध्यमों पर सराही जा रही हैं । इनमें अपनी सीमाओं के घेरे में जहां शब्दों को कलम वहीं भावों को तूलिका और संगीत की धुनों में पिरोने की क्षमता भी है । सामाजिक दायित्वों के निर्वहन को अपना कर्तव्य बोध मानते हुये कई सामाजिक संस्थाओं से भी जुड़ी हैं । साहित्य की काव्य विधा में अभिरुचि के फलस्वरूप स्वर्गीय पिता ’उमेश चन्द्र दुबे’ के इउमेशड’ को उपनाम से अंगीकृत किया और अपना नाम यामा शर्मा ’उमेश’ लि खा है। एवं अपने स्व: पिता की अप्रकाशित रचनाओं को संकलित कर काव्य संग्रह ड’ जब मौन मुखर हो जाता है’ड प्रकाशित कराया । उन रचनाओं को स्वर देकर इपहला श्रोताड नाम से भ्दलूँ पर संकलित कर रही हैं । मैनपुरी के साहित्यिक अभिरुचि वाले शिक्षित संयुक्त परिवार में पली बढ़ी यामा ने

एम.ए. (राजनीति विज्ञान) ’तबल’ वादन से स्नातक बैडमिंटन, हाकी में आगरा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व मैनपुरी की प्रसिद्ध विधा ’तारकशी’ का प्रशिक्षण प्राप्त किया।

एक सुगढ़ गुहणी, समाजसेवी होने के साथ साथ अपनी ल ेखनी को अविराम स्वान्त: सुखाय के लिए लिखने वाली जिनमें संस्मरण, लघु कथा, आपबीती और कविताएं ,जो विभिन्न डायरियों में कैद है

ड साप्ताहिक और मासिक पत्रिकाओं में लघु कथा,

कविताएं एवं संस्मरण प्रकाशित हुए

ड शिक्षा के प्रति जागरूकता असमर्थ बच्चों, विशेषकर कन्याओं को प्रोत्साहित कर भविष्य की शिक्षा की सुचारु व्यवस्था

ड प्रकृति से प्रेम के वशीभूत ऊऊऊ के आन्दोलन (वन एवं पर्यावरण संरक्षण),एवं पौधरोपण पर कार्य करते हुए पक्षियों को स्वछन्द जीवन के लिए दाना पानी ।

ड जलवायु परिवर्तन एवं पर्यावरण संरक्षण हेतु कार्यक्रमों में भागीदारी

ड गरीब महिला कलाकारों के लिए इएकाड संस्था के माध्यम से विक्रय की उचित व्यवस्था ।

इन्हें अनेक सम्मान एवं पुरस्कार मिले हैं । जिनमें प्रमुख हैं:-

- नमामि गंगे चित्रकला प्रतिभागिता

- स्मार्ट सिटी देहरादून चित्र एवं लेखन प्रतियोगिता

- ‘संस्कार भारती’ द्वारा परम्परा संरक्षण के लिए सम्मानित

- ‘प्रजातंत्र का स्तम्भ’ द्वारा सम्मानित

- ’उमा (उत्तरांचल महिला एसोशियेशन)’ द्वारा कई प्रतियोगिताओं में पुरस्कार मिले- लेखन, पाक कला एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम

- संस्कार भारती की सक्रिय कार्यकर्ता , कार्यक्रमो मे

भागीदारी

कई सम्मानों से सम्मानित

- भारत विकास परिषद की द्रोणशाखा के अध्यक्ष पद पर रहकर कई सामाजिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में जागरूकता एवं पिछड़े वर्ग के लिए भागीदारी की है

- साझा संकलनों मे कविताएं प्रकाशित हो चुकी हैं

- नई कलम और नया कलाम मंच की सचिव पद पर होने के साथ साथ ऑनलाइन कार्यक्रमो का सफलतापूर्वक संचालन कर रही हैं।

- कोविड से जूझते हुए परिवारों को सहयोग किया

- प्लास्टिक प्रदूषण से बचने के विकल्पों को आगे लायीं

और सामाजिक स्तर पर काम किया

- ज़रूरतमंदों के लिए शिक्षा के साधन उपलब्ध करवाए और कई बच्चों को मुफ्त शिक्षा दिलवायी और रोज़गार का प्रबंध किया

सम्मान:

इहिन्दी साहित्य के मंचो से जुड़ने का सौभाग्य मिलाड शहर समता देहरादून इकाई की सचिव, महिला काव्य मंच, अन्तर्राष्ट्रीय साहित्यिक मित्र मंडल मंच, श्री गोपाल दास नीरज काव्य मंच, साहित्यकार सृजन मंच, वरिष्ठ नागरिक काव्य मंच,जीवन्ती सामाजिक एवं साहित्यिक संस्था ,हृदयांगन सामाजिक साहित्यिक संस्था, उत्तराखंड सखी साहित्यिक परिवार की अध्यक्ष पद एवं जिजीविषा समाजिक संस्था की सदस्य, नई कलम नया कलाम की सचिव।

हिन्दी साहित्य समिति देहरादून से सम्मानित गोपाल दास नीरज साहित्य संस्थान द्वारा चित्र अभिव्यक्ति लेखन से सम्मानित बुलंदी ओनलाइन कवि सम्मेलन द्वारा साहित्य गौरव से सम्मानित तस्वीर क्या बोले प्रतियोगिता से सम्मानित लिटिल हैल्थ टैस्ट एवं शैक्षिक आगाज से महिला दिवस पर सम्मानित साहित्य सृजन मंच से सम्मानित कई हिंदी मंचों पर सम्मान और साझा-संकलन में आपकी रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं